REVIEWS OF LITERATURE
ISSN: 2347-2723
IMPACT FACTOR : 3.3754(UIF)
VOLUME - 5 | ISSUE - 7 | FEBRUARY - 2018

अध्यापक शिक्षा की कल और आज

डॉ. धीरज परमार
सहप्राध्यापक , आणंद एज्युकेशन कोलेज, आणंद .

सारांश

स्वतंत्रताके बाद शिक्षामें सुधार लानेके लिए कोठारी कमिशनने अपने रिपोर्टमें लिखा था कि राष्ट्रकी गुणवत्ता अपने शिक्षको की गुणवत्तासे अधिक नहीं हो सकती । शिक्षक की गुणवत्ताकी आवश्यकता पर कमिशन ने अपनी आवाज रखी थी । शिक्षक को तैयार करनेवाली अध्यापक शिक्षा मे गुणवत्ता होनी चाहिए । अध्यापक शिक्षा संस्थामें काफी बढावा हुआ है लेकिन उस संस्थामें दी जानेवाली अध्यापक शिक्षा गुणवत्ता के बारे में सोचना प्रवर्तमान समयकी आवश्यकता है । अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता के लिए प्रशिक्षक, पाठ्यक्रम, मूल्यांकन और भौतिक संशाधनमें सुधार लानेकी काफी आवश्यकता है । अध्यापक शिक्षा से गुणवत्तासभर शिक्षा पाने से प्रशिक्षणार्थी की जीवनदृष्टि मे बदलावे आयेगा और ज्ञानात्मक, भावात्मक और क्रियात्मक ये शिक्षा के तीन उदेश्यो की समज पायेगा ।

अध्यापक शिक्षा की संकल्पना

अध्यापक शिक्षा याने के स्नातक शिक्षाके बाद जो छात्र-छात्राको शिक्षक बनना है उसके लिए जो शिक्षाकी व्यवस्था है उसे अध्यापक शिक्षा कहा जाता है । अध्यापक शिक्षा संस्था प्रशिक्षणार्थीको कुशळ, योग्य और सफल शिक्षक बनाने के लिए तैयार करती है । अध्यापक शिक्षा का संबंध स्कूल शिक्षा से है । स्कूल शिक्षामें सुधार लाने के लिए अध्यापक शिक्षा में पढते हुए प्रशिक्षणार्थी जो भावी शिक्षक है उसे गुणवत्तायुक्त शिक्षा देना अति आवश्यक है । कोठारी - कमिशन ने भी अपने रीपोर्टमें ये बाते बताई है । शिक्षक गुणवत्तायुक्त तो पूरा राष्ट्र गुणवत्तायुक्त हो जायेगा । अध्यापक शिक्षा भावी शिक्षको का व्यक्तिगत, सामाजिक, व्यावसायिक और नैतिक विकास करके प्रभावशाली शिक्षक तैयार करने का कार्य करती है । प्राचीनकाल में शिक्षक के लिए शिक्षा की आवश्यकता नहीं थी । वीसमी सदी की शुरुआतमे विश्वके सभी देशोमे अध्यापक शिक्षाके बारे में चर्चा हुई । शिक्षण कौशलो, पद्धति, प्रयुक्ति और शिक्षा के सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक संदर्भ ध्यान में रखकर योग्य शिक्षक तैयार करने के बारेमें विचार विमर्श हुआ ।

अध्यापक शिक्षा में प्रशिक्षणार्थीको बच्चोको कैसे पढाया जाये, बच्चो की प्रकृति को समजना, शिक्षाकी पद्धति, प्रयुक्तिको जानना और शिक्षा के मनोवैज्ञानिक सामाजिक संदर्भ को समजाया जाता है । एक अचछे शिक्षक के लिए न कैवल बी.एड. की परीक्षा उत्तीर्ण करना आवस्यक है । लेकिन शिक्षक के रुप में अपनी जिम्मेदारी को जानना, समझना और उस मे कुशलता प्राप्त करना ये भी जरुरी है । शिक्षक को शाला में शिक्षा देना, परीक्षा एवं मूल्यांकन, करना, सहअभ्यास प्रवृत्ति का आयोजन और संचालन, शाला प्रशासन, अनुशासन जैसे कार्य करना पडता है । अध्यापक शिक्षा प्रशिक्षणार्थीको सैद्धांतिक और व्यवहारिक ज्ञान और औपचारिक तथा अनौपचारिक शिक्षा तथा अनुभवो का ज्ञान प्रदान करके तैयार करती है ।

अध्यापक शिक्षा की कल और आज:-

शिक्षा व्यवस्था मनुष्यजीवन की एक पुरानी और प्रतिष्ठित व्यवस्था है । अध्यापक का स्थान वैदिक काल में सबसे अधिक महत्वपूर्ण था । उस वक्त अध्यापक शिक्षा की कोई

खास प्रणालि याने के व्यवस्था नहीं थी । गुरु छात्रो को विविध विषयो का ज्ञान प्रदान करते थे । अध्यापक शिक्षाकी औपचारिक व्यवस्था नहीं थी । समाज में शिक्षा प्रदान करने मे ब्राह्मिन समुदायके लोक शिक्षा व्यवसाय के साथ जुडे हुए थे । मध्यकाल में शिक्षा का संचालन मदरसो के माध्यम से मौलवी लोग करते थे । वैदिककाल की तराह अध्यापक अपने काबिल एवं योग्य छात्रकी मददसे वर्ग संचालन करते थे ।

ब्रिटिशकाल अध्यापक शिक्षाके लिए सबसे अच्छा वक्त था । अध्यापक शिक्षा मे कई नये प्रयोग की वजह से एक विषय के रुपमे एक अलग पहचान बनी । भारत मे आधुनिक शिक्षा और अध्यापक शिक्षाको विकसित करने मे ब्रिटिश शासन की अहम् भूमिका थी । ब्रिटिश शासन की अहम् भूमिका थी । ब्रिटिश शासन में अध्यापक शिक्षा प्रणाली का विकास हुआ । ब्रिटिश शासन में डैनिश मिशनरी के द्वारा अध्यापक शिक्षा की शुरुआत बंगाल के सेरामपुर मे सन 1793मे हुई । बादमे इस्ट इंडिया कंपनी ने सन 1856 मे मद्रास तथा 1980 मे लाहौर मे अध्यापक शिक्षा संस्था का निर्माण किया ।

आजादी के बाद अध्यापक शिक्षा के विकास के लिए कई सारी व्यवस्था की गई । स्वतंत्रता के बाद शिक्षा के लिए गठीत कीए गए आयोगो तथा समितिने भी अध्यापक शिक्षा के लिए सरकार को कई सारे सुझाव दिए । एन.सी.इ.आर.टी और एस.सी.इ.आर.टी.ने अध्यापक शिक्षा को ठीक करने की कोशिश की । बादमे एम.सी.टी.ई (North council for Teacher Education)की स्थापना 1995 मे की गई । पूरे देश की अध्यापक शिक्षा संस्थाका नियंत्रण और विकास के लिए NCTE कार्य करती है । आज NCTEने शिक्षा के प्रसार को ध्यान में रखते हुए कई सारी अध्यापक शिक्षा संस्था की मान्यता दे रही है । इसलिए आज अध्यापक शिक्षा गुणवत्ताके बारे में कई सारे सवाल खडे है । स्वनिर्भर अध्यापक शिक्षा आजकल गली गली में हो गई है । इसलिए आज अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता खतरेमें है ।

अध्यापक शिक्षा की गुणवत्तामें सुधार :-

अध्यापक शिक्षा में गुणवत्ता का होना अत्यंत आवश्यक है । गुणवत्ता एक दिन में नहीं आती । गुणवत्ता को प्राप्त करना एक लंबी प्रक्रिया है । कोई भी घर का मूल्यांकन उस के क्षेत्रफल से नहीं होता, लेकिन घर में रहने वाले संस्कारी, समझदार और सहकार से रहते है उस पर होता है । अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता संस्था के प्रशिक्षक, पाठ्यक्रम, मूल्यांकन और भौतिक संसाधन के साथ संबंधित है ।

हमारे यहाँ जो शिक्षक बन ने को दाखिल हुआ है ये प्रशिक्षणार्थी अपनी इच्छासे शिक्षक बनने आया है, शिक्षक बनने की अभियोग्यता है कि नहीं ये नहीं जाना जाता । इसलिए अध्यापक शिक्षा के प्रवेश के लिए प्रावेशिक कसौटी होनी चाहिए ।

अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता मे शिक्षक - प्रशिक्षक की अहम् भूमिका है । आज अध्यापक शिक्षा संस्था में शिक्षक प्रशिक्षक की कमी है । NCTE के नियमानुसार अच्छे प्रशिक्षण को पाना मुश्किल है । कई सारी स्वनिर्भर संस्था में निर्धारित योग्यता को पूरा कर सके एसे प्रशिक्षक नहीं है । सरकारी अनुदानित संस्था में भी योग्य प्रमाण मे प्रशिक्षक नहीं है । अध्यापक नियुक्ति का कार्य जल्द से जल्द पूरा करना चाहिए । अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता प्रशिक्षक की योग्यता, उसकी सकारात्मक सोच, उसके व्यकित्व, उसकी कार्यशैली और उसकी मूल्यांकन की समज के साथ संबंधित है । शिक्षक प्रशिक्षक शिक्षा तकनीकी को जाननेवाला और व्यावसायिक विकास प्रति सकारात्मक होना चाहए । प्रशिक्षक प्रयोगशील, कुछ नया करनेवाला, ज्ञानकी वृद्धि करनेवाला होना चाहिए ।

अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम मे भी बदलाव आवश्यक है । पाठ्यक्रममें कंप्यूटर शिक्षा, योग शिक्षा, पर्यावरण शिक्षा, करियर मार्गदर्शन जैसे उपयोगी विषयो को पाठ्यक्रममें रखना आवश्यक है । इसके अलावा मूल्यशिक्षा, मानवधिकार शिक्षा, स्त्री शिक्षा, स्वास्थ्य शिक्षा जैसे विषयो को सामिल करना चाहिए । अध्यापक शिक्षामें गुणवत्ता सुधार के लिए 2015-16 से बी.एड पोग्राम दो साल का किया गया है । गुणवत्ता के लिए दो साल की अवधि आवश्यक है । अभी चार वर्षीय बी.ए.बी.एड और बी.एस.सी.बी.एड पाठ्यक्रम लानेकी चर्चा हो रही है । गुणवत्ता के लिए ये संकलित पाठ्यक्रम अच्छी सोच है ।

अध्यापक शिक्षा में मूल्यशिक्षा की वजह से नैतिक ताकात वाले शिक्षक तैयार करके देश में से भ्रष्टाचार मिटा सकते है । देश के कानून में बदलाव नहीं लेकिन मानवी के मनको बदलना अत्यंत आवश्यक है ये कार्य अच्छे गुणवत्तायुक्त शिक्षक से हो सकता है । इसलिए अध्यापक शिक्षाकी गुणवत्ता सुधार आवश्यक है ।

अध्यापक शिक्षा में सेवा पूर्व, सेवाकालीन, आजीवन और सतत शिक्षा, विस्तार सेवा कार्यक्रम और व्यावसायिक विकास के बारे में सोचना जरुरी है । प्रशिक्षणार्थी के मूल्यांकनमें भी कौशल, अभिवृत्ति, रुचि, कार्यकुशलता को ध्यान में रखना चाहिए । गुणवत्ता

के लिए अध्यापक शिक्षा संस्था को भौतिक संसाधन की आवश्यकता भी पूरी करनी पडेगी । वर्गखंड, ब्लैकबोर्ड, डस्टर, चौक, कम्प्यूटर, समर्थ प्रयोगशाला, प्रभावशाली पुस्ताकालय, अध्ययन अध्यापन सामग्री (TLM) को पूरा करना गुणवत्ता के लिए अत्यंत जरुरी है । शिक्षक बनने के लिए सरकार की ओर से ली जाने वाली टेट, टाट परीक्षा के लिए अध्यापक शिक्षा में कुछ अलग व्यवस्था करनी चाहिए ।

अध्यापक शिक्षामें गुणवत्ता आजकी आवश्यकता है । चलो, हम सब मिलकर अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता के बारे में दिल से अपना योगदान करे ।

★ संदर्भसूची

1 पटेल मोतीभाई (1998) भारतमें शिक्षा प्रणालीका विकास , बी.एस.शाह प्रकाशन, अहमदाबाद ।

2 पाठक उपेन्द्र (2000) शिक्षाकी क्षितिजे, बी.एस. शाह प्रकाशन, अहमदाबाद ।

3 दवे जयेन्द्र (2007) विकासमय भारतीय समाजमे शिक्षक, बी.एस.शाह प्रकाशन,अहमदाबाद ।

4 यादव, सतीशकुमार (2009) ''अध्यापक शिक्षा-समस्याए एव चुनौतियो -''भारतीय आधुनिक शिक्षा 30(2) 79-85 एन.सी.इ.आर.टी. नई दिल्ली ।

5 www. ncte.india.org.